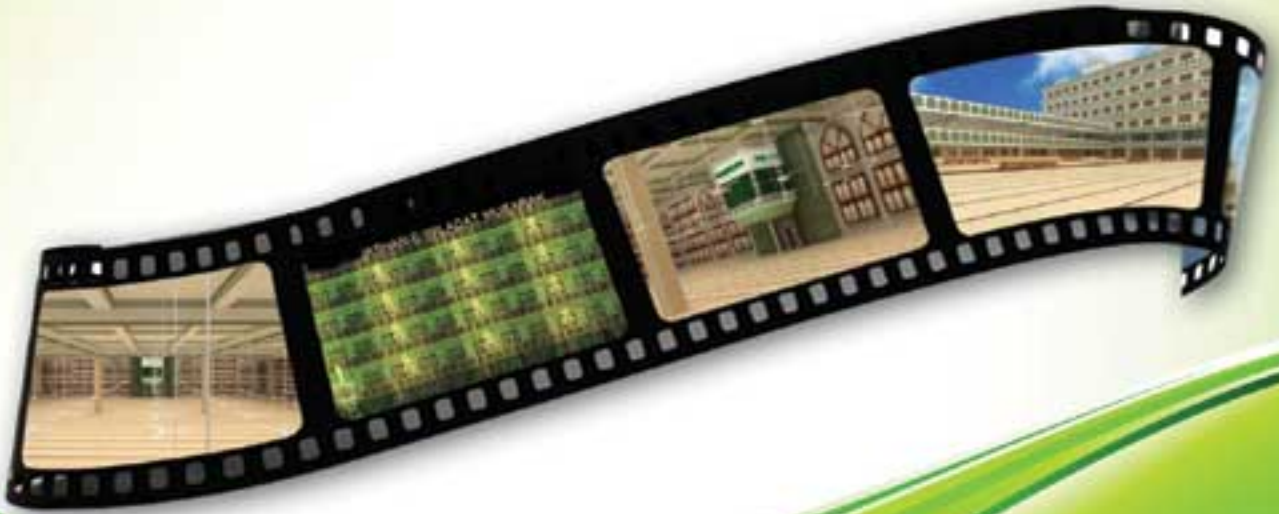




દા'વતે ઈસ્લામી

કી જાલકિયાં

DAWATE ISLAMI KI JHALKIYAN (GUJARATI)



مكتبة المدينة
(دعوت اسلامی)
SC 1286

પેશકશ :
મર્કઝી મજલિસે શૂરા (દા'વતે ઈસ્લામી)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 مَا بَعُدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

दा'वते ईस्लामी की अलफियां

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मडबूब, दानाअे गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 इरमाते हें, “जो मुज पर अेक बार दुरद तेजे अल्लाह तआला उस पर दस बार रडमत नाजिल
 इरमाओगा.” (مسلم ص 216 الحديث 408).

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्तफा जाने रडमत, शम्मे अजमे ह्दियात, नोशअे
 अजमे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मडबूबत की
 उस ने मुज से मडबूबत की और जिस ने मुज से मडबूबत की वोह जन्नत में मेरे साथ डोगा.

(تاريخ دمشق، ج 9 ص 343 دارالفكر بيروت)

हुजुरे अकदस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया :

”مَنْ تَمَسَّكَ بِسُنَّتِي عِنْدَ فَسَادِ أُمَّتِي فَلَهُ أَجْرُ مَاءٍ شَهِيدٍ“ (مشکوٰۃ المصابیح، ج 1 ص 500 حديث 176)

(या'नी) जिस ने मेरी उम्मत के बिगडते वक्त मेरी सुन्नत को मजबूत थामा तो उसे 100 शहीदों का
 सवाब है. मुइस्सिरे शहीर डकीमुल उम्मत डजरते मुइती अडमद यार ખान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस डदीस के
 तइत इरमाते हें : शहीद तो अेक बार तलवार का जम्म खा कर पार डो जाता है मगर येड अल्लाह
 का बन्दा उम्र त्रर डोगों के ता'ने और जबानों के धाव खाता रडता है. अल्लाह और रसूल
 عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खातिर सब कुछ बरदाशत करता है. और इस का जिहाद जिहादे अकबर
 है जैसे इस जमाने में दाढी रपना, सूद से बचना वगैरा. (मिरआत, जि. 1, स. 173)

दा'वते ईस्लामी की अररत

पारड 4 सूरअे आले ईमरान आयत नम्बर 104 में अल्लाहु रडमान عَزَّوَجَلَّ का इरमाने
 ह्दियात निशान है :

وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى
 الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
 وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأُولَئِكَ
 هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٤﴾ (پ 4 ال عمران)

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : और तुम में अेक
 गुरौड अैसा डोना याहिये के तलार्थ की तरइ
 बुलाअे और अखरी बात का डुकम हें और
 डुरी से मन्अ करें और येडी डोग मुराद को
 पडोंये.

ઇસ આયતે મુકદ્દસા કી તફસીર બયાન કરતે હુએ મુફ્સિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن تَفْسِيْرَةَ نَدِيْمِي جِلْد 4 سَفْحَا 72 પર ફરમાતે હેં : “એ મુસલ્માનો ! તુમ સબ કો એસી જમાઅત હોના ચાહિયે યા એસી જમાઅત બનો યા એસી જમાઅત બન કર રહો જો તમામ ટેઢે લોગોં કો ખૈર (યા’ની ભલાઈ) કી દા’વત દે, કાફિરોં કો ઈમાન કી, ફાસિકોં કો તક્વે કી, ગાફિલોં કો બેદારી કી, જાહિલોં કો ઈલ્મો મા’રિફત કી, ખુશક મિઝાજોં કો લઝ્ઝતે ઈશક કી, સોને વાલોં કો બેદારી કી ઓર અચ્છી બાતોં, અચ્છે અકીદોં, અચ્છે અ-મલોં કા ઝબાની, ક-લમી, અ-મલી, કુલ્વત સે, નરમી સે (ઓર હાકિમ અપને મહકૂમ કો) ગરમી સે હુકમ દે, ઓર બુરી બાતોં, બુરે અકીદે, બુરે કામોં, બુરે ખયાલાત સે લોગોં કો ઝબાન, દિલ, અમલ, કલમ, તલવાર સે (અપને અપને મન્સબ કે મુતાબિક) રોકે.”

(તફસીરે નદીમી, જિ. 4, સ. 72)

છોટે બડે સભી મુબલ્લિગ હેં

મુફ્તી સાહિબ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ મઝીદ ફરમાતે હેં : “સારે મુસલ્માન મુબલ્લિગ હેં, સબ પર હી ફર્ઝ હૈ કે લોગોં કો અચ્છી બાતોં કા હુકમ દેં ઓર બુરી બાતોં સે રોકે.” મતલબ યેહ કે જો શખ્સ જિતના જાનતા હૈ ઉતના દૂસરે ઈસ્લામી ભાઈયોં તક પહોંચાએ જિસ કી તાઈદ મેં મુફ્સિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ નક્લ કરતે હેં : હુઝૂર તાજદારે મદીના صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ફરમાયા : بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَاتٍ “મેરી તરફ સે પહોંચા દો અગર્યે એક હી આયત હો.”

(صحيح البخارى ج ٢ ص ٤٦٢ حديث ٣٤٦١)

દુઆએ કબૂલ નહીં હોંગી

હઝરતે સય્યિદુના હુઝૈફા બિન યમાન رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ બયાન કરતે હેં કે નબિય્યે પાક صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈશાદ ફરમાયા : उस जात की कसम ! जिस के कब्जअे कुदरत में मेरी जान है तुम ज़रूर नेकी का हुकम देते रहना और बुराई से रोकते रहना वरना अन्करीब अल्लाह तआला तुम पर अजाब भेज देगा. फिर तुम दुआ करोगे तो तुम्हारी दुआ कबूल न होगी.

(جامع الترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء في الأمر بالمعروف..... الخ ج ٤ ص ٦٩ حديث ٢١٧٦)

અઝાબે ઈલાહી કી વઈદ

હઝરતે સય્યિદુના જરીર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ બયાન કરતે હેં કે મેં ને પ્યારે આકા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કો યેહ ફરમાતે સુના : जिस कौम में गुनाहों के काम किये जा रहे हों और वोह उन गुनाहों को मिटाने की कुदरत रखते हों और फिर भी न मिटाएँ तो अल्लाह तआला उन को मरने से पहले अजाब में मुप्तला कर देगा.

(سنن ابى داؤد كتاب الملاحم ج ٤ ص ١٦٤ حديث ٤٣٣٩)

“દા’વતે ઈસ્લામી” કા આગાઝ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! અલ્લાહુ રહીમ عَزَّوَجَلَّ ને ઉમ્મતે મહબૂબે કરીમ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કો હર દૌર મેં એસી નાબિગએ રૂઝગાર હસ્તિયાં અતા ફરમાઈ જિન્હોં ને ન સિર્ફ ખુદ عَنِ الْمُنْكَرِ وَنَهَى عَنِ الْمَعْرُوفِ (યા’ની નેકી કા હુકમ ઓર બુરાઈ સે મન્અ કરને) કા મુકદ્દસ ફરીજા બ તરીકે અહસન અન્જામ દિયા બલકે

मुसल्मानों को अपनी और सारी दुनिया के लोगों की ईस्लाह की कोशिश करने का जेहन दिया. उन्ही में अक हस्ती शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत हजरते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्य़ास अत्तार कादिरि २-अवी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** हैं जिन्हों ने सि. 1401 हि. अ मुताबिक 1981 ई. में बाबुल मदीना (कराची) में तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक “दा’वते ईस्लामी” के म-दनी काम का आगाज अपने यन्द् रु-इका के साथ किया. आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** पौड़े जुदा व ईशके रसूल, ज़ुबअे ईत्तिबाअे कुरआनो सुन्नत, ज़ुबअे अेइयाअे सुन्नत, ओइदो तक्वा, अइवो दर गुजर, सभ्रो शुक्र, आजिजी व ईन्किसारी, सा-दगी, ईप्लास, हुस्ने अप्लाक, दुन्या से बे रब्बती, डिफ़ाजते ईमान की इिक, इरोगे ईल्मे दीन, पैर प्वाहिये मुस्लिमीन जैसी सिफ़ात में यादगारे अस्लाइ हैं. आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** ने ईस म-दनी तहरीक “दा’वते ईस्लामी” के जरीअे लाभों मुसल्मानों बिल जुसूस नौ जवान ईस्लामी भाईयों और बहनों की जिन्दगियों में म-दनी ईन्किलाब बरपा कर दिया, कई बिगडे हुअे नौ जवान तौबा कर के राहे रास्त पर आ गअे, बे नमाजी न सिई नमाजी बल्के नमाजें पढाने वाले (या’नी ईमामे मस्जिद) बन गअे, मां बाप से ना जैबा रविअ्या ईप्तियार करने वाले बा अदब हो गअे, कुइ के अंधेरो में तटकने वालों को नूरे ईस्लाम नसीब हुवा, यूरोपी मुमालिक की रंगीनियों को देअने के प्वाहिश मन्द् का’बतुल मुशर्रफ़ व गुम्बदे भजरा की जियारत के लिये बे करार रहने लगे, दुन्या के बे ज गमों में धुलने वाले इिके आभिरत की म-दनी सोय के डामिल बन गअे, इोइश रसाईल और इूलड डार्जस्टों के शाईकीन उ-लमाअे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** के रसाईल और दीगर दीनी कुतुब का मुता-लआ करने लगे, तइरीह की भातिर सइर के आदी म-दनी काइलो में आशिकाने रसूल के हमराह राहे जुदा में सइर करने वाले बन गअे और मइज्ज दुन्या की दौलत ईकई करे को मक्सदे हयात समजने वालों ने ईस म-दनी मक्सद को अपना लिया के **إِنَّ سَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** “मुजे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की ईस्लाह की कोशिश करनी है.”

(1) 72 मुमालिक : **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक “दा’वते ईस्लामी” ता दमे तहरीर दुन्या के तकरीबन 72 मुमालिक में अपना पैगाम पड़ोया चुकी है और आगे इूय जारी है.

(2) गैर मुस्लिमों में तब्लीग : लाभों बे अमल मुसल्मान, नमाजी और सुन्नतों के आदी बन चुके हैं. मुप्तलिइ मुमालिक में गैर मुस्लिम बी मुबत्विलीने दा’वते ईस्लामी के हाथों मुशर्रफ़ अ ईस्लाम होते रहते हैं.

(3) म-दनी काइले : “आशिकाने रसूल” के सुन्नतों की तरबियत के बे शुमार म-दनी काइले मुल्क अ मुल्क शहर अ शहर और करिया अ करिया सइर कर के ईल्मे दीन और सुन्नतों की बहारें लुटा रहे और नेकी की दा’वत की धूमें मया रहे हैं.

(4) म-दनी तरबियत गाहें : मु-तअदद मकामात पर तरबियत गाहें काईम हैं जिन में दूरो नजदीक से ईस्लामी भाई आ कर कियाम करते, आशिकाने रसूल की सोहबत में सुन्नतों की तरबियत पाते और इिर कुर्बों जवार में ज कर “नेकी की दा’वत” के म-दनी इूल मइकाते हैं.

(5) मसाजिद की ता’मीर : के लिये “मजलिसे जुदा मुल मसाजिद” काईम है, मुल्क व बैरुने मुल्क मु-तअदद मसाजिद की ता’मीरात का हर वक्त सिव्सिवा रहता है, कई शहरों में म-दनी मराकिज “इैजाने मदीना” की

ता'मीरात का काम भी जारी है.

(6) आर्म्भमे मसाजिद : बे शुमार मसाजिद के ईमाम व मुअज़्ज़िनीन और फादिमीन के तर्कुर के साथ साथ मुशा-हरे (तन-प्वाहों) की अदाओगी का भी सिखिला है.

(7) गूंगे, बहरे और नाबीना (पुसूसी ईस्लामी भाई) : इन के अन्दर भी म-दनी काम हो रहा है और इन के म-दनी काफ़िले भी सफ़र करते रहते हैं. नीज़ नाबीना और गूंगे बहरो में “म-दनी काम” बढाने के लिये ईशारों की ज़बान सिफ़ाने के लिये उमूमी या'नी नोर्मल ईस्लामी भाईयों में वक्तन इ वक्तन 30, 30 दिन के कोर्सिज़ बनाम कुइले मदीना कोर्स करवाओ जाते हैं.

(1) क्रिस्येन का कबूले ईस्लाम

बाबुल मदीना (करायी) सि. 2007 ई. में राहे फ़ुदा ۞ में सफ़र करने वाले नाबीना ईस्लामी भाईयों का ओक म-दनी काफ़िला मत्वूबा मस्जिद तक पड़ोयने के लिये बस में सुवार हुवा. उस म-दनी काफ़िले में यन्द उमूमी (या'नी अंभियारे) ईस्लामी भाई भी शामिल थे. अभीरे काफ़िला ने बराबर बैठे शप्स पर ईन्किरादी कोशिश करते हुओ उस का नाम वगैरा मा'लूम किया तो वोह कहने लगा : “मैं क्रिस्येन हूं, मैं ने मजहबे ईस्लाम का मुता-लआ किया है और इस मजहब से मु-तअस्सिर भी हूं मगर ई ज़माना मुसल्मानों का बिगडा हुवा किरदार मेरे लिये कबूले ईस्लाम की राह में रुकावट है, मगर मैं देख रहा हूं के आप लोग ओक जैसे (सफ़ेद) लिबास में मल्बूस हैं, बस में यठे और बुलन्द आवाज़ से सलाम किया और हैरत तो इस बात की है के आप के साथ नाबीना अशफ़ास ने भी सर पर सज़्ज ईमामा और सफ़ेद लिबास को अपना रफ़ा है, इन सब के येहरों पर दाढी भी है.”

उस की गुफ़्त-गू सुनने के बा'द अभीरे काफ़िला ने उसे मुफ़्तसर तौर पर “मजलिसे पुसूसी ईस्लामी भाई” के बारे में बताया. फिर शौभे तरीकत अभीरे अडले सुन्नत ۞ की टीने ईस्लाम के लिये की जाने वाली अज़ीम भिदमात का तज़क़िरा किया और दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल का तआरुफ़ भी करवाया. फिर उस से कहा के “येह नाबीना ईस्लामी भाई उन्डी दुन्यादार मुसल्मानों (जिन्हें देख कर आप ईस्लाम कबूल करने से कतरा रहे हैं) की ईस्लाह के लिये निकले हैं.” येह बात सुन कर वोह ईतना मु-तअस्सिर हुवा के कलिमा पढ कर मुसल्मान हो गया.

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

(8) जेलफ़ाने : कैदियों की ता'लीम व तरबियत के लिये जेलफ़ानों में भी म-दनी काम की तरकीब है. करायी सेन्ट्रल जेल में कैदियों को आलिम बनाने के लिये जामिअतुल मदीना का भी सिखिला है. कई डाकू और जराईम पेशा अफ़राद जेल के अन्दर होने वाले म-दनी कामों से मु-तअस्सिर हो कर ताईब होने के बा'द रिहाई पा कर आशिकाने रसूल के साथ म-दनी काफ़िलों के मुसाफ़िर बनने और सुन्नतों तबरी जिन्दगी गुज़ारने की सआदत पा रहे हैं, आ-तशीं अखिले के जरीओ अंधाधुंध गोलियां बरसाने वाले अब सुन्नतों के म-दनी कूल बरसा रहे हैं ! मुबत्लिगीन की ईन्किरादी कोशिशों के बाईस कुइफ़ार कैदी भी मुशरफ़ ब ईस्लाम हो रहे हैं.

म-दनी मडबूब की जुल्फों का असीर

दा'वते ईस्लामी के वसीअ दा'रअे कार को ब हुस्नो ખૂબી यलाने के लिये मुप्तलिङ्ग मुल्कों और शहरों में मु-तअदद मजलिस बनाई जाती हैं. मिन जुम्हा मजलिसे राबिता बिल उ-लमाअे वल मशा'रफ भी है जो के अक्सर उ-लमाअे किराम पर मुशतमिल है. इस मजलिस के ईस्लामी भाई मशहूर दीनी दर्सगाह जामिआ राशिदिय्या (पीर जो गोठ बाबुल ईस्लाम सिन्ध) तशरीफ ले गये. बर सभिले तजकिरा जेलखानों में दा'वते ईस्लामी के म-दनी काम की बात यली तो वहां के शैखुल हदीस साहिब कुछ इस तरह इरमाने लगे, जेलखानों के म-दनी काम की ताबनाक म-दनी कारकईगी में खुद आप को सुनाता हूं, पीर जो गोठ के नवाह में अेक डाकू ने तबाही मया रफी थी, मैं उस को जानता था, आअे दिन पोलीस के साथ उस की आंख मियोली जारी रहती, कई बार गरिफतार भी हुवा मगर असरो रुसूष ईस्ति'माल कर के छूट गया. आबिरश किसी जुर्म की पादाश में बाबुल मदीना करायी की पोलीस के हथ्ये बढ गया, सजा हुई और जेल में यला गया. सजा काट लेने के आ'द रिहाई मिलने पर मुज से मिलने आया. मैं पडली नजर में उस को पडयान न सका क्यूंके मैं ने इस को दाढी मुंडा और सर बरहना देखा था मगर अब इस के येहरे पर भीठे भीठे आका मदीने वाले मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मडबूबत की निशानी नूरानी दाढी जगमगा रही थी, सर पर सज्ज सज्ज ईमामा शरीफ का ताज अपनी बहारें लुटा रहा था, पेशानी पर नमाजों का नूर नुमायां नजर आ रहा था. मेरी हैरत का तिलिस्म तोडते हुअे वोह बोला, कैद के दौरान जेल के अन्दर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मुजे दा'वते ईस्लामी का म-दनी माडोल मुयस्सर आ गया और आशिकाने रसूल की ईन्क़िरादी कोशिश की ब-र-कत से मैं ने गुनाहों की बेडियां काट कर अपने आप को म-दनी मडबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जुल्फों का असीर बना लिया.

रहमतों वाले नबी के गीत जब गाता हूं मैं गुम्बदे पजरा के नज़ारों में प्यो जाता हूं मैं
जहाँ तो जहाँ कहां मैं किस का हूँ आसरा लाज वाले लाज रचना तेरा कडवाता हूं मैं
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

(9) ईजतिमाई अे'तिकाई : दुन्या की बे शुमार मसाजिद में माहे र-मजानुल मुबारक के 30 दिन और आबिरी अ-शरे में ईजतिमाई अे'तिकाई का अेहतिमाम किया जाता है. इन में हजारहा ईस्लामी भाई ईल्मे दीन हासिल करते, सुन्नतों की तरबियत पाते हैं. नीज कई मो'तकिईन यांद रात ही से आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काइलों के मुसाफिर बन जाते हैं.

(4) अे'तिकाई की ब-र-कत से सारा खानदान मुसल्मान हो गया

अेक ईस्लामी भाई के बयान का खुलासा है के कल्यान (महाराष्ट्र, अल हिन्द) की मेमन मस्जिद में तबलीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते ईस्लामी की जानिब से र-मजानुल मुबारक (सि. 1426 हि./2005 ई.) में होने वाले ईजतिमाई अे'तिकाई में अेक नौ मुस्लिम ने (जो के कुछ अर्सा कब्ल अेक मुबद्लिगे दा'वते ईस्लामी के हाथों मुसल्मान हुअे थे) अे'तिकाई की सआदत हासिल की. सुन्नतों तरे बयानात, केसिट ईजतिमाआत और सुन्नतों तरे हडकों ने उन पर खूब म-दनी रंग बढाया, अे'तिकाई की ब-र-कत से दीन की तबलीग के अजीम जजबे का रोशन यराग उन के हाथों में आ गया यूंके उन के घर के

દીગર અફરાદ અભી તક કુફ કી અંધેરી વાદિયોં મેં ભટક રહે थे युनान्हे अे'तिकाङ से फ़ारिग હોते હी ઉન્હોં ને અપને ઘર વાલોં પર કોશિશ શુરૂઅ કર દી, દા'વતે ઈસ્લામી કે મુબલ્લિગીન કો અપને ઘર બુલવા કર દા'વતે ઈસ્લામ પેશ કરવાઈ. 'اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ' વાલિદૈન, દો બહનોં ઓર એક ભાઈ પર મુશ્તમિલ સારા ખાનદાન મુસલ્માન હો ગયા ફિર સિલ્સિલએ આલિય્યા કાદિરિય્યા ર-ઝવિય્યા મેં દાખિલ હો કર હુઝૂરે ગૌસે પાક عليه رَحْمَةُ اللهِ الرَّاق کا મુરીદ બન ગયા.¹

વલવા દોં કી તબ્લીગ કા પાઓગે મ-દની માહોલ મેં કર લો તુમ એ'તિકાફ
ફઝલે રબ સે ઝમાને પે દા જાઓગે મ-દની માહોલ મેં કર લો તુમ એ'તિકાફ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

(ફેઝાને સુન્નત, બાબ : ફેઝાને ર-મઝાન, જિ. 1, સ. 1470)

1: 'اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ' શેખે તરીકત અમીરે અહલે સુન્નત હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી دامت برکاتهم العالیہ દોરે હાઝિર કી વોહ યગાનએ રુઝગાર હસ્તી હેં કે જિન સે શ-રફે બૈઅત કી બ-ર-કત સે લાખોં મુસલ્માન ગુનાહોં ભરી ઝિન્દગી સે તાઈબ હો કર **अَبْلَاح** عَزَّوَجَلَّ કે અહકામ ઓર ઉસ કે પ્યારે હબીબે લબીબ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી સુન્નતોં કે મુતાબિક પુર સુકૂન ઝિન્દગી બસર કર રહે હેં. ખૈર ખ્વાહિયે મુસ્લિમ કે મુકદ્દસ જઝબોં કે તહ્ત હમારા મ-દની મશ્વરા હેં કે અગર આપ અભી તક કિસી જામેએ શરાઈત પીર સાહિબ સે બૈઅત નહીં હુએ તો શેખે તરીકત અમીરે અહલે સુન્નત دامت برکاتهم العالیہ કે કુયૂઝો બ-રકાત સે મુસ્તફીદ હોને કે લિયે ઈન સે બૈઅત હો જાઈયે. صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ઈદુન્યા વ આખિરત મેં કામ્યાબી વ સુરખુરૂઈ નસીબ હોગી.

મુરીદ બનને કા તરીકા : અગર આપ મુરીદ બનના યાહતે હેં, તો અપના ઓર જિન કો મુરીદ યા તાલિબ બનવાના યાહતે હેં ઉન કા નામ નીચે તરતીબ વાર મઅ વલ્દિયત વ ઉમ્ર લિખ કર “મજલિસે મક્તૂબાતો તા'વીઝતે અત્તારિય્યા” મ-દની મર્કઝ દા'વતે ઈસ્લામી ફેઝાને મદીના તીન કોનીયાં બગીચા કે પાસ,મિરઝા પૂર અહમદ આબાદ 380022 ગુજરાત કે પતે પર રવાના ફરમા દે, તો صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ભી સિલ્સિલએ કાદિરિય્યા ર-ઝવિય્યા અત્તારિય્યા મેં દાખિલ કર લિયા જાએગા. (પતા ઈંગ્રેઝી કે કેપીટલ હુરૂફ મેં લિખે) E.Mail : Attar@dawateislami.net

(10) હફતાવાર, (11) સૂબાઈ ઓર (12) હજ કે બા'દ સબ સે બડા સુન્નતોં ભરા ઈજતિમાઅ : દુન્યા કે મુખ્તલિફ મુમાલિક મેં હઝારોં મકામાત પર હોને વાલે હફતાવાર સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઆત કે ઈલાવા આલમી ઓર સૂબાઈ સત્હ પર ભી સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઆત હોતે હેં. જિન મેં હઝારોં, લાખોં આશિકાને રસૂલ શિર્કત કરતે હેં ઓર ઈજતિમાઅ કે બા'દ ખુશ નસીબ ઈસ્લામી ભાઈ સુન્નતોં કી તરબિયત કે મ-દની કાફિલોં કે મુસાફિર ભી બનતે હેં. મદી-નતુલ ઔલિયા મુલતાન શરીફ (પાકિસ્તાન) મેં વાકેઅ સહરાએ મદીના કે કસીર રકબે પર હર સાલ ૩ દિન કા બૈનલ અક્વામી સુન્નતોં ભરા ઈજતિમાઅ હોતા હૈ, જિસ મેં દુન્યા કે કઈ મુમાલિક સે મ-દની કાફિલે શિર્કત કરતે હેં. બિલા શુબા યેહ મુસલ્માનોં કા હજ કે બા'દ સબ સે બડા સુન્નતોં ભરા ઈજતિમાઅ હોતા હૈ.

નશે કી આદત છૂટ ગઈ

નવાબ શાહ (સિન્ધ) કે મુકીમ ઈસ્લામી ભાઈ કે બયાન કા ખુલાસા હૈ કે દા'વતે ઈસ્લામી કે સુન્નતોં ભરે બૈનલ અક્વામી ઈજતિમાઅ કી તય્યારિયાં ઝોરો શોર સે જારી થીં. મુશ્કબાર મ-દની માહોલ કી તરબિયત કી બદૌલત મેરા ભી નેકી કી દા'વત આમ કરને કા ઝેહૂન થા યુનાન્યે મેં ને એક નૌ જવાન કો ઈજતિમાઅ કી દા'વત પેશ કી તો કહને લગે : ભાઈ મેં કિસી વજહ સે ઈજતિમાઅ મેં નહીં જા સકતા. મેં ને **अَبْلَاح** عَزَّوَجَلَّ કા નામ લિયા ઓર નેક સફર ઓર નેક ઈજતિમાઆત કે ફઝાઈલ બતાને શુરૂઅ કર દિયે. રબ તઆલા કો ઉસ કા ભલા મકસૂદ થા. વોહ નૌ જવાન તય્યાર હો ગયા ઓર હમ સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઅ કી બહારેં લૂટને કે લિયે ઈજતિમાઅ મેં પહોંચ ગએ. કુદૃ દેર તક તો સબ ઠીક ઠાક યલા ફિર અયાનક ઉસ નૌ જવાન કી હાલત

गैर होने लगी और उस ने वापसी की ढान ली लेकिन आरिजी ँलाज और ँस्लामी त्वाँयों की ँन्क़िरादी कोशिश की बढौलत वोड मुत्मँन डो गया. ँजतिमाअ की पुरकैङ्क बढारों में उस नौँ जवान ने ढूँ ढूँ ँक़्तिसाबे डैङ्क किया और ढूँ रो रो कर दुआओं मांगीं. ँज्जितामे ँजतिमाअ पर डम धर आ गअे. ड़िर कुँ माड बा'द उस नौँ जवान से मुलाकात हुँ तो उस नौँ जवान से डाल अडवाल पूँ, उस ने डैरत अंगेङ्क आत अताँ के दर अस्ल मुँ नशे की लत पड गँ थी, बिगैर ँन्जेकशन लगाअे सुकून नडीं मिलता था, मुँड लगी यीङ्क ँडना दुशवार तरीन था, **अल्लाह** ﷻ आप का तला करे के मुँे ँजतिमाअ में ले गअे 'اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ' जब से सुन्नतों तरे ँजतिमाअ से वापसी हुँ है **अल्लाह** ﷻ के डङ्कलो करम से मुँे नशे की ला'नत से छुटकारा नसीब डो गया है. न सिई सिडूडत संतल गँ बडे मेरे और बडुत से बिगडे काम संवर गअे डैँ.

(13) ँस्लामी बडनों में म-दनी ँन्क़िलाब : ँस्लामी बडनों के त्मी शर-ँ पदे के साथ मु-तअदद मकामात पर डङ्कतावार सुन्नतों तरे ँजतिमाआत डोते डैँ. ला ता'दाद बे अमल ँस्लामी बडनें आ अमल, नमाजी और म-दनी बुरकओं की पाबन्ड डो युकी डैँ. दुन्या के मुप्तलिङ्क मुमालिक में धरों के अन्दर ँन के तकरीबन रोजाना डजारों मदारिस अनाम मद्र-सतुल मदीना (बालिगात) त्मी लगाअे जाते डैँ, अेक अन्दाजे के मुताबिक ता दमे तडरीर पाकिस्तान त्र में ँस्लामी बडनों के **3268** मद्रसे तकरीबन रोजाना लगते डैँ जिन में **40453** ँस्लामी बडनें कुरआने पाक, नमाज और सुन्नतों की मुङ्कत ता'लीम पातीं और दुआओं याद करती डैँ. 'اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ' जिम्मेदार ँस्लामी बडनों की म-दनी तरबियत के लिये मुड के मुप्तलिङ्क मकामात पर "कुरआनो डडीस कोर्स" और आबुल मदीना (करायी) में 12 दिन के तरबियती कोर्स और काङ्किला कोर्स की त्मी तरकीब डोती है.

में डेशन अेबल थी

आबुल मदीना (करायी) की अेक ँस्लामी बडन का बयान कुँ यूं है : दा'वते ँस्लामी की ब-र-कते पाने से कड्ल में अेक डेशन अेबल लडकी थी. बाल कटवाना, लम्बे लम्बे नाभुन रभना, त्मवें बनवाना, डर्क डर्क व युस्त लिबास पहन कर दुपड्डा गले में लटका कर तङ्करीड गाडों में धूमना ड़िरना मेरा काम था. गाने सुनने का तो अैसा शौक था के छोटा सा रेडियो मेरे पास रहता जिसे मैं डर वक्त ओन रभती. शादियों में डोलक बजाती, गाने गाती थी. मुँे अपनी जिन्दगी बडी पुर लुङ्क और आ रौनक लगती थी मगर मैं नडीं जानती थी के येड अन्दाजे जिन्दगी कड्रो डशर में मेरी परेशानी का सडब बन सकता है. बिल आभिर मुँे डंग से जने का सलीका आ गया. येड सलीका मुँे "डैँजाने मदीना" में डोने वाले दा'वते ँस्लामी के ँस्लामी बडनों के डङ्कतावार सुन्नतों तरे ँजतिमाअ से मिला. मैं म-दनी माडोल से अैसी मु-तअस्सिर हुँ के क्या डैँली सत्ड का ँजतिमाअ क्या शडर सत्ड का ! डर ँजतिमाअ में शिर्कत को अपना मा'मूल बना लिया. बयान कर्दा गुनाडों से बयने पर ँस्तिकामत नसीब डो गँ. शर-ँ पदा करने के लिये म-दनी बुरकअ अपने लिबास का डिस्सा बना लिया. मद्र-सतुल मदीना (बिल अनात) में दाबिला ले कर तजवीद से कुरआने पाक पढना न सिई सीब लिया बडे दूसरों को सिभाने वाली या'नी मुअद्लिमा बन गँ. ता दमे तडरीर दा'वते ँस्लामी के डैँली सत्ड के सुन्नतों तरे ँजतिमाअ की जिम्मेदार डूं. **अल्लाह** ﷻ मुँे ड

सियाह को दा'वते ईस्लामी के "म-दनी माहोल" में ईस्तिकामत नसीब इरमाओ.

اللّٰمِن بجاہ النبی الامین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

अल्लाह करम ऐसा करे तुज पे जहां में

औं दा'वते ईस्लामी तेरी धूम मयी हो

(14) म-दनी ईन्आमात : ईस्लामी भाईयों और ईस्लामी बहनों और त-लबा को इराईज व वाजिबात, सुन्न व मुस्तहब्बात और अज्बाकियात का पाबन्द बनाने और मोहलिकात (या'नी हलाकत में डालने वाले आ'माल) से बचाने के लिये म-दनी ईन्आमात की सूरत में अेक निजामे अमल दिया गया है. बे शुमार ईस्लामी भाई, ईस्लामी बहनें और त-लबा "म-दनी ईन्आमात" के मुताबिक अमल कर के रोजाना सोने से कब्ल "इंके मदीना" या'नी अपने आ'माल का जअेजा ले कर जेबी साईज रिसाले में दिये गअे जाने पुर करते हैं.

म-दनी ईन्आमात किस के लिये कितने ?

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! इस पुर इतिन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के तरीकअे कार पर मुश्तमिल शरीअत व तरीकत का जामेअ मजमूआ बनाम "म-दनी ईन्आमात" ब सूरते सुवालात मुरत्तब किया गया है. ईस्लामी भाईयों के लिये **72**, ईस्लामी बहनों के लिये **63**, त-ल-बअे एल्मे दीन के लिये **92**, दीनी तालिबात के लिये **83**, म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों के लिये **40**, जब के फुसूसी ईस्लामी भाईयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये **27** म-दनी ईन्आमात हैं.

रोजाना इंके मदीना करने का ईन्आम

अेक ईस्लामी भाई की तहरीर का फुलासा है : 'الحمد لله عز وجل' मुजे म-दनी ईन्आमात से प्यार है और रोजाना इंके मदीना करने का मेरा मा'मूल है. अेक बार में तबलीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते ईस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काइले में आशिकाने रसूल के साथ सूबअे बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के सईर पर था. इसी दौरान मुज गुनहगार पर बाबे करम फुल गया. हुवा यूं के रात को जब सोया तो किस्मत अंगडाई ले कर जग उठी, जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم फ्वाब में तशरीफ ले आअे, अभी जल्वों में गुम था के लबलाअे मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रहमत के इल जडने लगे, अल्फाज कुछ यूं तरतीब पाअे : जो म-दनी काइले में रोजाना इंके मदीना करते हैं में उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा.

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्तफ़ा

के पडोसी फुलद में अपना बनाया शुक्रिया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہ تعالیٰ علی محمّد

(इंजाने सुन्नत, बाब : इंजाने र-मजान, इजाईले र-मजान शरीफ, जि. 1, स. 931)

(15) म-दनी मुजा-करात : बसा अवकात "म-दनी मुजा-करात" के ईजतिमाआत का ईन्ईकाद ली होता है जिस में अकाईद व आ'माल, शरीअत व तरीकत, तारीफ व सीरत, तिबाबत व इहानियत वगैरा मुफ्तलिफ मौजूआत पर पूछे गअे सुवालात के जवाबात दिये जाते हैं. (येह जवाबात फुद अभीरे अहले सुन्नत العاليه دامت برکاتہم العاليه देते हैं)

(16) इडानी धलाज और धस्तिभारा : दुभियारे मुसल्मानों का ता'वीजात के जरीअे डी सनीलिल्लाह धलाज क्रिया जाता है. ता दमे तहरीर माडाना 3 लाभ से अर्ध ता'वीजात और अवरानो वजारुड, 30 हजार से अर्ध मक्तूबात और कमो बेश 31 हजार धस्तिभारे ली क्रिये जाते हैं.

जिन्दा लाश

सूअअे सरहद के शहर कोडाट में मुकीम धस्लामी लाई के बयान का ખुलासा है के हमारे अलाके के अक धस्लामी लाई शदीद बीमार थे. कमजोरी धतनी के बिगैर सडारे के बिस्तर से उठना ली दुशवार था. उन की डालत देभ कर असा लगता था के गोया "जिन्दा लाश" हैं. 4 माह धसी आजमाईश में गुजर गअे. रफता रफता शिफा की आस "यास" में बदलती जा रही थी. ખूबिये क्रिस्मत के अक धस्लामी लाई ने उन को येड मश्वरा दिया के आप "मजलसे मक्तूबातो ता'वीजाते अत्तारिय्या" के बस्ते से ता'वीजात डसिल करें और वही से लिषी दुई मप्सूस प्लेटों का कोर्स ली करवाअें (जे के 40 प्लेटों पर मुशतमिल डोता है) بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ शिफा मिलेगी. उस धस्लामी लाई के मश्वरे पर अमल करते दुअे उनडों ने ता'वीजाते अत्तारिय्या के बस्ते से ता'वीजात डसिल क्रिये और लिषी दुई मप्सूस प्लेटें ली डसिल कीं. अली उनडों ने तीन डी प्लेटें धस्ति'माल की थीं के بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ उन की तबीअत काई हद तक संभल गई. 40 प्लेटें मुकम्मल डोने पर उन की तबीअत मजीद बेडतर डो गई. अब वोड इ ब सिद्धत हैं और शैभे तरीकत अभीरे अडले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةَ से बैअत डो कर अत्तारी ली बन युके हैं.

अडलाड عَزَّوَجَلَّ की अभीरे अडले सुन्नत पर रडमत डो और धन के सडके डमारी मगिरत डो

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْإِمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(17) दुज्जज की तरबियत : हज के मौसिमे बडार में डल्ल केमों में मुबद्लिगीने द्वा'वते धस्लामी डल्लियों की तरबियत करते हैं. हज व जियारते मदीनअे मुनव्वरह में रडनुमाई के लिये मदीने के मुसाफिरों को मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ हज की कितान "रईकुल ड-रमैन" ली मुफ्त पेश की जाती है.

(18) ता'लीमी धदारे : ता'लीमी धदारों म-सलन दीनी मदारिस, स्कूल, कोलेजिज और यूनीवर्सिटीज के असातिजा व त-लबा को भीठे भीठे आका मदीने वाले मुस्तफा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतों से इ शनास करवाने के लिये ली म-दनी काम डो रड है. बे शुमार त-लबा सुन्नतों लरे धजतिमाआत में शिकत करते हैं नीज म-दनी काइलों के मुसाफिर ली बनते रडते हैं, بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ मु-तअदद दुन्यवी उलूम के दलददाडे बे अमल त-लबा, नमाजी और सुन्नतों के आदी डो गअे.

(19) जामिअतुल मदीना : मुल्क व बैइने मुल्क में कसीर जामिआत बनाम "जामिअतुल मदीना" काईम हैं धन के जरीअे ला ता'दाद धस्लामी लाईयों को (हस्बे जइरत क्रियाम व तआम की सडूलतों के साथ) "दरसे निजामी" (या'नी आलिम कोर्स) और धस्लामी बडनों को "आलिमा कोर्स" की मुफ्त ता'लीम दी जाती है. अडले सुन्नत के मदारिस के मुल्क गीर धदारे तन्जीमुल मदारिस (पाकिस्तान) की जानिब से लिये जाने वाले धन्तिडानात में बरसों से तकरीबन हर साल "द्वा'वते धस्लामी" के जामिआत के त-लबा और तालिबात

पाकिस्तान में नुमायां काभ्याबी हासिल कर के बसा अवकात अव्वल, दुवुम और सिवुम पोजीशन हासिल करते हैं.

(20) मद्र-सतुल मदीना : अन्दरूने व बैरूने मुल्क छिड़ो नाजिरा के ला ता'दाद मदारिस बनाम “मद्र-सतुल मदीना” काँम हैं. पाकिस्तान में ता दमे तहरीर कमो बेश 70 हजार म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियों को छिड़ो नाजिरा की मुफ्त ता'लीम दी जा रही है.

(21) मद्र-सतुल मदीना (बाविगान) : इसी तरह मुप्तलिङ मसाजिद वगैरा में उमूमन बा'द नमाजे ईशा हजारहा मद्र-सतुल मदीना की तरकीब होती है जिन में ईस्लामी भाई सहीद मभारिज से छुड़ू की दुरुस्त अदाओगी के साथ कुरआने करीम सीपते और दुआओं याद करते, नमाजें वगैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ्त हासिल करते हैं.

(22) शिफाफाने : महदूद पैमाने पर शिफाफाने बी काँम हैं जहां बीमार त-लबा और म-दनी अ-मले का मुफ्त ईलाज किया जाता है, ज़रतन दाखिल बी करते हैं नीज हस्बे ज़रत बडे अस्पतालों के जरीअे बी ईलाज की तरकीब बनाई जाती है.

(23) तपस्सुस फ़िल फ़िकह : या'नी “मुफ़ती कोर्स” और “तपस्सुस फ़िल इनुन” का बी सिक्सिला है जिस में मु-तअदद उ-लमाअे किराम ईफ़ता की तरबियत और मपूसूस ईल्मी इन की महारत पा रहे हैं.

(24) शरीअत कोर्स व तिज्जरत कोर्स : ज़रिय्याते दीन से इ शनास करवाने के लिये वक्तन इ वक्तन मुप्तलिङ कोर्सिज करवाअे जाते हैं म-सलन अपनी नौईय्यत का मुन्ज़रिद “शरीअत कोर्स” और “तिज्जरत कोर्स” वगैरा.

(25) मजलिसे तहकीकते शर-ईय्या : मुसल्मानों को पेश आ-मदा जदीद मसाईल के हल के लिये मजलिसे तहकीकते शर-ईय्या मसज़्फे अमल है जो के दा'वते ईस्लामी के मुबल्लिगीन उ-लमा व मुफ़्तियाने किराम पर मुशतमिल है.

(26) दारुल ईफ़ता अहले सुन्नत : मुसल्मानों के शर-ई मसाईल के हल के लिये मु-तअदद “दारुल ईफ़ता” काँम किये गअे हैं जहां दा'वते ईस्लामी के मुबल्लिगीन मुफ़्तियाने किराम, बिल मुशाफ़ा, तहरीरी और मक्तूबात के जरीअे शर-ई मसाईल का हल पेश कर रहे हैं. अक्सर इतावा कम्प्यूटर पर कम्पोज कर के दिये जाते हैं.

(27) ईन्टरनेट : ईन्टरनेट की वेब साईट www.dawateislami.net के जरीअे दुन्या भर में ईस्लाम का पैगाम आम किया जा रहा है.

(28) हाथों हाथ दारुल ईफ़ता अहले सुन्नत : दा'वते ईस्लामी की वेब साईट www.dawateislami.net में दारुल ईफ़ता अहले सुन्नत पर दुन्या भर के मुसल्मानों की तरफ़ से पूछे जाने वाले मसाईल का हल बताया जाता, कुड़ज़र के ईस्लाम पर अे'तिराजात के जवाबात दिये जाते और इन को ईस्लाम की दा'वत पेश की जाती है. नीज दुन्या भर से किये जाने वाले सुवालात के रात दिन हाथों हाथ फ़ोन पर जवाबात दिये जाते हैं.

(वोड फ़ोन नम्बर येह है : 0092-021-34940443)

(29, 30) मक-त-अतुल मदीना और अल मदी-नतुल ईस्मिय्या : इन दोनों ईदारों के जरीअे सरकारे आ'ला

બૈઠે અચ્છા ખાસા ઇલ્મે દીન સીખા જા સકતા હૈ.

(39) મજલિસે રાબિતા : અહમ દીની, સિયાસી, સમાજી, ખેલ ઔર દીગર શો'બાહાએ ઝિન્દગી સે તઅલ્લુક રખને વાલી શખ્સિયાત કો દા'વતે ઇસ્લામી કા પૈગામ પહોંચાને કે લિયે મજલિસ મસરૂફે અમલ રહતી હૈ.

(40) મજલિસે માલિયાત : પ્રોફેશનલ એકાઉન્ટન્ટ (professional accountant) ઔર ઝિમ્મેદારાન કી ઝેરે નિગરાની “દા'વતે ઇસ્લામી” કી આમ્દન વ અખરાજાત કી દેખભાલ કે લિયે મજલિસે માલિયાત ભી કાઈમ હૈ.

રાહે ખુદા મેં ખર્ચ કરને કે ફઝાઈલ પર

મુશ્તમિલ 5 ફરામીને મુસ્તફા

﴿1﴾ હઝરતે સઅ્યિદુના ખુજૈમ બિન ફાતિક رضي الله تعالى عنه સે મરવી હૈ કે રસૂલે અકરમ صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ને ફરમાયા : “જો **अَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ કી રાહ મેં કુછ ખર્ચ કરે ઉસ કે લિયે સાત સો ગુના સવાબ લિખા જાતા હૈ.” (તરમ્ઝી, જ' ૩, વ' ૨૩૩)

﴿2﴾ તુમ મેં સે કૌન હૈ કે ઉસે અપને વારિસ કા માલ અપને માલ સે ઝિયાદા મહબૂબ હૈ ? સહાબએ કિરામ عليهم الرضوان ને અર્ઝ કી : **يا رسول الله!** હમ મેં સે કોઈ ઐસા નહીં જિસે અપના માલ ઝિયાદા મહબૂબ ન હો. ફરમાયા : અપના માલ વોહ હૈ જો આગે રવાના ક્રિયા જો પીછે છોડ ગયા વોહ વારિસ કા માલ હૈ. (بخاری, ج' ૬, વ' ૨૩૦, حدિથ ૬૬૬૨)

﴿3﴾ સ-દકા બુરાઈ કે સત્તર દરવાઝે બન્દ કરતા હૈ. (બિહૃત્તી, જ' ૬, વ' ૧૦૯, حدિથ ૬૬૦૨)

﴿4﴾ સ-દકા બુરી મૌત કો રોકતા હૈ. (તરમ્ઝી, જ' ૨, વ' ૧૬૬, حدિથ ૬૬૬૬)

﴿5﴾ “ખર્ચ કરો ઔર શુમાર ન કરો કે **अَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ શુમાર કર કે દેગા.”

(بخاری, ج' ૧, વ' ૬૮૩, حدિથ ૬૬૬૬)

મ-દની ઇતિજાએ

ઈસ ઇજમાલી ફેહરિસ કે ઇલાવા ભી **الحمد لله عز وجل** દા'વતે ઇસ્લામી કે મઝીદ કઈ મ-દની કામ હૈં. બરાએ કરમ ! અપની ઝકાત, ફિત્રા, સ-દકાત, અતિથ્યાત ઔર કુરબાની કી ખાલેં દેને કે સાથ સાથ અપને રિશ્તેદારોં, પડોસિયોં ઔર દોસ્તોં પર ભી ઇન્ફિરાદી કોશિશ ફરમા કર ઇન કે અતિથ્યાત ઔર કુરબાની કી ખાલેં ભી દા'વતે ઇસ્લામી કે મ-દની મર્કઝ પર પહોંચા કર યા કિસી ઝિમ્મેદાર ઇસ્લામી ભાઈ કો દે કર યા મ-દની મર્કઝ પર ફોન કર કે કિસી ઇસ્લામી ભાઈ કો તલબ ફરમા કર ઉન્હેં ઇનાયત ફરમા દીજિયે. દેને કે બા'દ રસીદ ઝરૂર હાસિલ કીજિયે. **अَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ આપ કા સીના મદીના બનાએ.

એક અહમ શર-ઈ મસ્જિદ

હમેશા કુરબાની કી ખાલેં ઓર નફલી અતિયાત “કુલ્લી ઇખ્તિયારાત” યા’ની કિસી ભી નેક ઓર જાઈઝ કામ મેં ખર્ચ કર લિયે જાએં ઇસ નિયત સે ઇનાયત ફરમાયા કરેં ક્યૂંકે અગર મખ્સૂસ કર કે દિયા મ-સલન કહા કે, “યેહ દા’વતે ઇસ્લામી કે મદ્રસે કે લિયે હૈ” તો અબ મસ્જિદ યા કિસી ઓર મદ (યા’ની ઉન્વાન) મેં ઇસ કા ઇસ્તિ’માલ કરના ગુનાહ હો જાએગા. લેને વાલે કો ભી યાહિયે કે અગર કિસી મખ્સૂસ કામ કે લિયે ભી ચન્દા લે તો એહતિયાતન કહ દિયા કરે કે હમારે યહાં મ-સલન દા’વતે ઇસ્લામી મેં ઓર ભી દીની કામ હોતે હૈં. આપ હમેં “કુલ્લી ઇખ્તિયારાત” દે દીજિયે તાકે યેહ રકમ દા’વતે ઇસ્લામી જહાં મુનાસિબ સમજે વહાં નેક ઓર જાઈઝ કામ મેં ખર્ચ કરે. (ઝકાત ઓર ફિત્રા મેં કુલ્લી ઇખ્તિયારાત લેને કી હાજત નહીં ક્યૂંકે યેહ “શર-ઈ હીલે” કે ઝરીએ ઇસ્તિ’માલ કિયે જાતે હૈં.)

મ-દની મર્કઝ દા’વતે ઇસ્લામી

ફૈઝાને મદીના

તીન કોનીયાં બગીચા કે પાસ, મિરઝા પૂર

અહમદ આબાદ - 380001, ગુજરાત (india)

અતિયાત જમ્મ કરવાને કે લિયે બેંક એકાઉન્ટ નમ્બર્ઝ

મ-દની ચેનલ ઓર સ-દકાતે નાફિલા કે લિયે

Bank Name : State bank of india.

A / C Name. : **Dawate islami hind**

A / C No. : 30216534242

ઝકાત વ સ-દકાતે વાજિબા જમ્મ કરવાને કે લિયે

Bank Name : Axis bank

A / C Name. : **Dawate islami Hind**

A / C No. : 910010026818286